दैनिक भास्कर नर्मदापुरम भास्कर 01-08-2026

नर्मदा कॉलेज: प्रेमचंद जयंती पर संगोष्ठी, विद्यार्थियों ने कहानियों पर किया संवाद

भास्कर संवाददाता | नर्मदापुरम

पीएमश्री नर्मदा कॉलेज में हिंदी विभाग के तत्वावधान में प्रेमचंद जयंती और प्रज्ञा प्रवाह पर संयुक्त संगोष्ठी हुई। मुख्य अतिथि संतोष व्यास रहे। अध्यक्षीय उद्‌बोधन में प्राचार्य डॉ. आरके चौकसे ने दिया। वरिष्ठ प्राध्यापक रवि उपाध्याय ने बताया संगोष्ठी में विद्यार्थियों ने परिचर्चा और संवाद शैली में ईदगाह, कफन, बूढ़ी काकी, पूस की रात, नमक का दरोगा के प्रसंग और सार रखे। संचालन संतोष अहिरवार ने किया। कार्यक्रम संयोजक केजी मिश्र ने आभार व्यक्त किया।

कार्यक्रम का प्रतिवेदन अंजना यादव ने प्रस्तुत किया। परिचर्चा में डॉली माधव, आरती, स्कंदा वाजपेई, सौम्या कहार, अभिषेक कीर सहित विद्यार्थियों ने भाग लिया। संगोष्ठी में राजेश दीवान, जे के कमलपुरिया, राजीव शर्मा, आशीष तोमर, ममता गर्ग, कल्पना विश्वास, कुमुदिनी गार्गव, अर्चना पटेल, भारती सेवतिया सहित बड़ी संख्या में विद्यार्थी मौजूद रहे।

ताप्ती समन्वय
01/08/26

प्रेमचंद जयंती पर संगोष्ठी: विद्यार्थियों ने साहित्य और मानवीय मूल्यों पर किया संवाद

नर्मदापुरम्,ताप्ती समन्वय। पी एम श्री नर्मदा कॉलेज में आज हिंदी विभाग के तत्वावधान में प्रेमचंद जयंती और प्रज्ञा प्रवाह पर संयुक्त संगोष्ठी का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ मां सरस्वती और प्रेमचंद जी के चित्र के समक्ष दीप प्रज्वलन के साथ हुआ। डॉ संतोष अहिरवार ने संचालन करते हुए कार्यक्रम का उद्देश्य, रूपरेखा और साहित्यकार उपन्यास सम्राट की कहानियां और पर प्रकाश डाला ।उन्होंने बताया कि प्रेमचंद ने अपनी कथाओं के माध्यम से सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक समस्याओं को केंद्र में रखकर चित्रण किया । विद्यार्थियों ने परिचर्चा और संवाद शैली में प्रेमचंद जी की कहानियां ईदगाह, कफन, बूढ़ी काकी, पूस की रात, नमक का दरोगा आदि के प्रसंग और सारांश सुनाएं ।साथ ही सत्य, प्रेम, दया , मानवीय कर्तव्य तथा भारतीय संस्कृति के मूल्यों को आत्मसात करनेऔर जीवन में उतारने की बात कही।

वरिष्ठ प्राध्यापक डॉ रवि उपाध्याय ने छात्र-छात्राओं को बताया कि अपने छोटों के प्रति दया प्रेम क्षमा और अपनत्व की भावना तथा बड़ों के प्रति सम्मान सहयोग आदर के भाव रखना हमारी संस्कृति है। हमें अपने कर्तव्यों और दायित्वों का बोध होना चाहिए। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि डॉ संतोष व्यास ने व्यवहारिक शिक्षा और मानवीय मूल्यों पर विस्तार से मार्गदर्शन दिया। उन्होंने युवाओं से कहा कि वर्तमान समय में केवल किताबी ज्ञान हासिल करना ही पर्याप्त नहीं है अपितु बौद्धिक दरिद्रता कम करने के लिए नैतिक सिद्धांतों को अपनाना भी जरूरी है। पद, पैसा, प्रतिष्ठा, पूजा और पुरस्कार यह पांच चीज दैविय कामनाओं का हनन करती हैं। व्यक्ति के लिए शिक्षा अपरिहार्य है, क्योंकि शिक्षा व्यक्ति को सही सोच विवेक और दिशा प्रदान करती है।अध्यक्षीय उद्बोधन देते हुए प्राचार्य डॉ आर के चौकसे ने कहा कि हमें वही व्यवहार करना चाहिए जो समाज में स्वीकृत तथा मानवीय मूल्यों पर आधारित हो। सिर्फ किताबी ज्ञान नहीं संवेदनशीलता भी जरूरी है। आज ईर्ष्या, द्वेष और दिखावा हावी हो गया है वहीं अपनत्व, सरलता और सहजता की कमी होती जा रही है। भगवत गीता , रामचरितमानस के मूल्यों को अपनाएं।कार्यक्रम के संयोजक डॉ के जी मिश्र ने आभार व्यक्त करते हुए कहा कि प्रेमचंद जी का साहित्य मूल्यों ,यथार्थ और आदर्शों का संग्रह है वर्तमान समय में इसकी प्रासंगिकता बढ जाती है। जीवन मूल्यों की रक्षा नैतिक मूल्यों से ही की जा सकती है।प्रतिवेदन डॉ अंजना यादव का रहा।डॉली माधव, आरती, स्कंदा वाजपेई सौम्या कहार ,अभिषेक कीर आदि विद्यार्थियों ने परिचर्चा में हिस्सा लिया। डॉ राजेश दीवान ,डॉ जे के कमलपुरिया, डॉ राजीव शर्मा ,डॉ आशीष तोमर, डॉ ममता गर्ग, डॉ कल्पना विश्वास ,डॉ कुमुदिनी गार्गव, डॉ अर्चना पटेल, डॉ भारती सेवतिया सहित अधिक संख्या में विद्यार्थी उपस्थित रहे।

सिर्फ किताबी ज्ञान आवश्यक नहीं संवेदनशीलता भी हो : प्राचार्य चौकसे

जागरण, नर्मदापुरम। पीएमश्री नर्मदा कॉलेज में शुक्रवार को हिंदी विभाग के तत्वावधान में प्रेमचंद जयंती और प्रज्ञा प्रवाह पर संयुक्त संगोष्ठी का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ मां सरस्वती और प्रेमचंद जी के चित्र के समक्ष दीप प्रज्वलन के साथ हुआ। डॉ संतोष अहिरवार ने संचालन करते हुए कार्यक्रम का उद्देश्य, रूपरेखा और साहित्यकार उपन्यास सम्राट की कहानियां और पर प्रकाश डाला ।उन्होंने बताया कि प्रेमचंद ने अपनी कथाओं के माध्यम से सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक समस्याओं को केंद्र में रखकर चित्रण किया ।

विद्यार्थियों ने परिचर्चा और संवाद शैली में प्रेमचंद जी की कहानियां ईदगाह, कफन, बूढ़ी काकी, पूस की रात, नमक का दरोगा आदि के प्रसंग और सारांश सुनाएं ।साथ ही सत्य, प्रेम, दया , मानवीय कर्तव्य तथा भारतीय संस्कृति के मूल्यों को आत्मसात करनेऔर जीवन में उतारने की बात कही।

वरिष्ठ प्राध्यापक डॉ रवि उपाध्याय ने छात्र-छात्राओं को बताया कि अपने छोटों के प्रति दया प्रेम क्षमा और अपनत्व की भावना तथा बड़ों के प्रति सम्मान सहयोग आदर के भाव रखना हमारी संस्कृति है। हमें अपने कर्तव्यों और दायित्वों का बोध होना चाहिए।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि डॉ संतोष व्यास ने व्यवहारिक शिक्षा और मानवीय मूल्यों पर विस्तार से मार्गदर्शन दिया। उन्होंने युवाओं से कहा कि वर्तमान समय में केवल किताबी ज्ञान हासिल करना ही पर्याप्त नहीं है अपितु बौद्धिक दरिद्रता कम करने के लिए नैतिक सिद्धांतों को अपनाना भी जरूरी है।